नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो. : 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक : 16.09.2017

प्रकाशनार्थ

भारत की जीवन परम्परा संतोष, संयम और सद्भाव की रही है। प्रकृति से प्रेम आकर श्रद्धा जन–जन में व्याप्त रही है। आज वर्तमान विश्व जिस पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है उसकी जड़ में वस्तुओं का अत्यधिक उपभोग और असंतोष की प्रवृति महत्वपूर्ण है। भारतीय जीवन पद्धति मे वर्तमान पर्यावरण संकट का उपाय नीहित है। प्रकृति के साथ साम्यता में ही मानव जीवन की सुरक्षा है। **मनुष्य के कर्मों का ही फल है पर्यावरण में क्षरण।** वैश्विक बाजारवाद और उपभोक्तावाद जीवन शैली ने जिस प्रकार से अन्धाधुन्ध उत्पादन और उपभोग को जीवन का मुख्य आधार बना लिया है, उसी के परिणाम स्वरूप आज न केवल विश्व के सामने बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए पर्यावरण का दूषित होना चिन्तनीय है। जीवन का हर क्षेत्र को वैज्ञानिक प्रगति के साथ जोड़ने से प्राकृतिक सन्तुलन में बिखराव आया है। मनुष्य कभी भी प्रकृति पर न तो विजय प्राप्त कर सकता है, न तो उसे विखण्डित कर सकता है और न ही उसके मानव हितकारी रहस्य को पूरी तरह से समझ सकता है। उसी पर्यावरणीय संकट में एक बड़ा पृथ्वी का सुरक्षा कवच कहे जाने वाला ओजोन परत का विखण्डन होना भी है। उक्त बातें **डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव** ने महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर के **राष्ट्रीय सेवा योजना** के तत्वावधान में **विश्व ओजोन संरक्षण दिवस** के अवसर पर बोलते हुए कही।

कार्यक्रम अधिकारी **डॉ0 यशवन्त कुमार राव** ने कहा कि ओजोन परत की बिरलता न केवल तापमान वृद्धि हो रही है बल्कि जलवायु परिवर्तन का यह एक बड़ा कारण है। इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम जैव–भू–जैव रासायनिक चक्र में परिवर्तन होना है। एक तरफ मानव जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है वहीं दूसरी तरफ हिमखण्ड पिघलने से भूक्षेत्र में कमी आ रही है। आने वाले समस में यह स्थिति अराजकता और अव्यवस्था का परिचायक दिखलाई पड़ रही है। ओजोन परत में विरलता से वह अमलीय वर्षा और घने कुहरे का प्रकोप दुनिया झेल रही है। वहीं दूसरी तरफ इस विखण्डन के नाते पराबैंगनी बीटा किरणों की अधिकता से न केवल पशु, पौधे बल्कि मानव भी बुरी तरह से दुष्प्रभावित है। विभिन्न प्रकार के होने वाले चर्म रोग, कैंसर रोग, मोतियाबिन्द, चमड़ियों में झुर्री पड़ना, त्वचा की कोशिकाओं में टूट–फूट होना इत्यादि संकट से आज यह जगत दो चार हो रहा है। इस गम्भीर संकट से उबरने का प्रयास यद्यपि की विश्व स्तर पर हो रहा है, जबकि उसकी अपेक्षा यह संकट और भी चुनौतिपूर्ण होता जा रहा है। समाधान अपरिहार्य है। संयमित जीवन शैली ही फिलहाल एक बड़ा उपाय दिखायी पड़ रही है।

(प्रकाश प्रियदर्शी)

सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी